साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

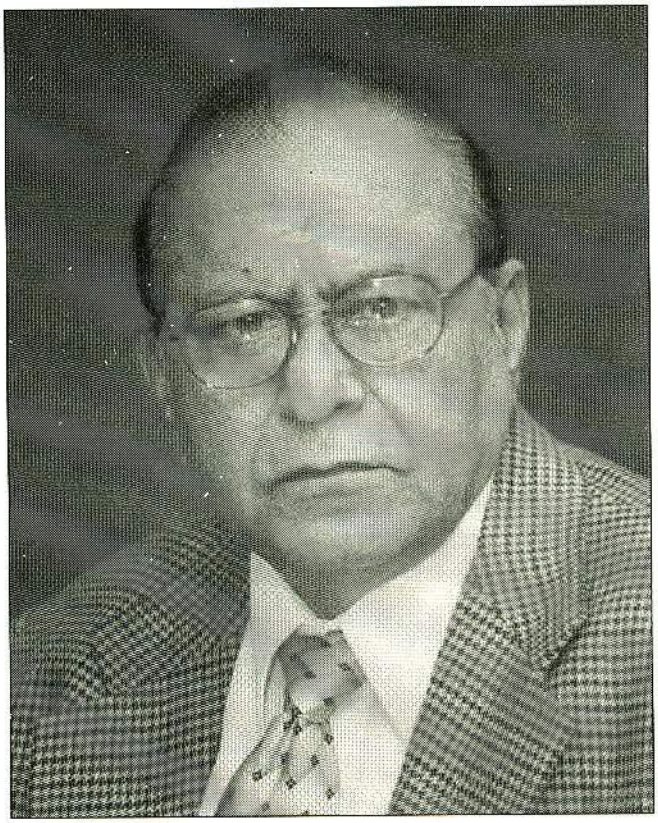

गोपी चंद नारंग

GOPI CHAND NARANG

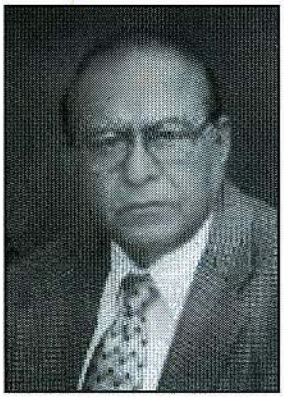

प्रो. गोपीचंद नारंग

PROF. GOPI CHAND NARANG

प्रो. गोपीचंद नारंग, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान—महत्तर सदस्यता प्रदान कर रही है, लब्धप्रतिष्ठ सिद्धांतकार, साहित्य समालोचक और विद्वान हैं, जिनके एकाग्र, विवेचनात्मक विदग्धता से युक्त सहज लेखन ने सिद्धांत-शून्यता की ओर गतिशील उर्दू-समालोचना की भावकेन्द्रित मूल्यांकन के बंधनों से मुक्त होने में सहायता की। आलोचना को बैठे-ठाले का काम की तरह बरतने के बजाय प्रो. नारंग ने उल्लेखनीय निरंतरता और कल्पनाशील सृजनात्मकता के साथ शैलीविज्ञान, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र का सहारा लेकर साहित्यिक मूल्यांकन के सैद्धांतिक ढाँचे और शास्त्र के विकास में आधारभूत योगदान किया।

प्रो. गोपीचंद नारंग ऐसे समालोचक मात्र नहीं हैं, जो उर्दू और अंग्रेज़ी में समान रूप से व्यापक तौर पर लिखते रहे हैं, बल्कि आप संपूर्ण भारतीय साहित्य की सौंदर्यशास्त्रीय संवेदना के उपयुक्त, सुसंगत और सुपरिभाषित साहित्यशास्त्र के लिए निरंतर कार्य करते रहे हैं। आधुनिक अवधारणाओं से नवीनतम साहित्य सिद्धांतों तक आपकी समादृत-प्रेरणास्पद शैली-कौशल से समृद्ध सृजनात्मक लेखनी गरिमापूर्ण ढंग से प्रत्येक विषय पर अपनी बौद्धिक अर्थच्छटा और विचक्षणता का परिचय देती है।

गोपीचंद नारंग का जन्म 11 फ़रवरी 1931 को दुक्की, बलूचिस्तान में हुआ। आपने 1954 में दिल्ली विश्वविद्यालय से उर्दू में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और शिक्षा मंत्रालय से अध्येतावृत्ति प्राप्त कर अपना डॉक्टरल शोधकार्य 1958 में पूरा किया। प्रो. नारंग ने सेंट स्टीफ़ेन्स कॉलेज (1957-58) में उर्दू साहित्य पढ़ाना शुरू किया और कुछ समय के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में आ गए जहाँ 1961 में रीडर हो गए। 1963 में आपने विज़िटिंग प्रोफ़ेसर के रूप में विस्कॉनसिन यूनिवर्सिटी में योगदान किया, जहाँ आपको 1968 में फिर से आमंत्रित किया गया। आपने मिनेसोटा यूनिवर्सिटी, मिनिएपोलिस और ओस्लो यूनिवसिटी, नॉर्वे में भी अध्यापन कार्य किया है। प्रो. नारंग ने 1974 में प्रोफ़ेसर और विभागाध्यक्ष के पद पर जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली में पदभार ग्रहण किया और वहाँ बारह वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् 1986 में दुबारा दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध हुए और वहाँ 1995 तक कार्यरत रहे। आपकी अपरिमित विद्वत्ता को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय ने आपको 2005 में 'प्रोफ़ेसर एमरिटस' बनाया।

प्रो. नारंग की साहित्यिक यात्रा का आरंभ शैलीविज्ञान, लाक्षणिकी और सामाजिक भाषा-विज्ञान से आपके विद्वत्तापूर्ण जुड़ाव से हुआ और आपकी

Prof. Gopi Chand Narang on whom the Sahitya Akademi bestows its highest and much-admired honour – the Fellowship – is a distinguished theorist, literary critic and scholar whose perceptive writings containing the fruits of a focused critical acumen have helped theory-avoidance prone Urdu criticism in getting itself extricated from the bonds of theme-centered evaluation. Far from treating criticism as a casual activity, Prof. Narang has made a seminal contribution in developing an epistemological and theoretical framework of literary evaluation by roping in stylistics, structuralism, post-structuralism and Eastern poetics with remarkable thoroughness and imagination.

Prof. Gopi Chand Narang is not just a literary critic who writes extensively in Urdu and English with equal felicity but has been consistently working towards a well-defined congruous literary poetics fully alive to the aesthetic sensibility of the entire body of Indian literature. From newfangled ideas to latest literary theories, his prolific pen endowed with an awe-inspiring stylistic prowess, slides from one topic to another with grace and felicity inexhaustible in its intellectual nuances and subtleties.

Gopi Chand Narang was born on February 11, 1931 in Dukki, Baluchistan. He did MA in Urdu from the University of Delhi in 1954 and got Research Fellowship by the Ministry of Education to complete his doctoral thesis, which he did in 1958. Professor Narang started teaching Urdu literature at St. Stephen's College (1957-58) and after a brief stint, he joined Delhi University and became a Reader in 1961. In 1963, he joined University of Wisconsin as a Visiting Professor and was re-invited for a second term as a Visiting Professor by the same University in 1968. He also taught at the University of Minnesota, Minneapolis, and University of Oslo, Norway. Professor Narang joined Jamia Millia Islamia University, New Delhi as a Professor and Head in 1974, and after serving Jamia for twelve years, he rejoined University of Delhi in 1986 and worked there till 1995. In 2005, the University of Delhi in recognition of his immense learning made him 'Professor Emeritus.'

पहली कृति *कारखानदरी डायलेक्ट ऑफ़ दिल्ली उर्दू* का प्रकाशन 1961 में हुआ था, जिसकी भूमिका डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने लिखी थी। दिल्ली के देशी मज़दूरों और कारीगरों द्वारा बोली जानेवाली उपेक्षित बोली का इसमें गहन सामाजिक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बीसवीं शताब्दी के अनेक आधारभूत साहित्यिक विमर्शों में प्रो. गोपीचंद नारंग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है तथा उर्दू, अंग्रेज़ी और हिन्दी में प्रकाशित आपकी 64 से अधिक कृतियाँ समकालीन वैचारिक स्थितियों और साहित्यिक विवादों पर आपकी तीक्ष्ण आलोचना दृष्टि और गहन समझ को दर्शाती हैं। आपके लेखन में बहुआयामी विमर्शों वाले विभिन्न वैचारिक प्रस्थान-बिन्दुओं को सक्रिय देखा जा सकता है, जिनकी एक समग्र लेखकीय विमर्श के रूप में पड़ताल नहीं की गई है।

आरंभ से ही आपकी उत्सुकता उर्दू भाषा की मिश्रित प्रकृति और बहुविधता के प्रति रही है। विभाजन के बाद भाषा के संकीर्ण राजनीतीकरण और संप्रदायीकरण के विरुद्ध आपने व्यवस्थित रूप से एक वैज्ञानिक विमर्श प्रस्तुत किया तथा उर्दू भाषा और साहित्य के समुच्चयबोधक प्रच्छन्न आधारों को स्थापित किया, साथ ही भारतीय मानस और चेतना के साथ इसकी गहन संबद्धता को उद्घाटित किया। इस क्रम में अंतर्सम्बद्ध अध्ययन वाली आपकी तीन कृतियाँ प्रकाशित हुईं— *हिन्दुस्तानी क़िस्सों से माख़ूज़ उर्दू मसनवियाँ* (1961), *उर्दू ग़ज़ल और हिन्दुस्तानी ज़ेहन-ओ-तहज़ीब* (2000) तथा *हिन्दुस्तान की तहरीक़-ए-आज़ादी और उर्दू शायरी* (2002), जो आधारभूत पुस्तकें हैं तथा सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में मील के पत्थर समझी जाती हैं। आपकी अन्य कृतियाँ *अमीर खुसरो का हिन्दवी कलाम* (1987), *सानिहा-ए-कर्बला बतौर शेरी इस्तियारा* (1986) तथा *उर्दू ज़बान और लिसानियात* (2006) सामाजिक-सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन-क्षेत्र में आपके विस्तृत दख़ल की साक्ष्य हैं। अमीर खुसरो पर केन्द्रित आपकी कृति उन दुर्लभ पांडुलिपियों पर आधारित है, जिन्हें आपने स्तात्सबिब्लियोलेक, बर्लिन में खोजा इस कृति में कवि की अज्ञात 150 हिन्दवी पहेलियाँ शामिल हैं।

सांस्कृतिक अध्ययनों के अलावा उर्दू में परंपरावादी, विश्लेषणात्मक और संरचनावादी आलोचना को भी गति मिली, जब प्रो. नारंग के गंभीर अंतर्दृष्टिपूर्ण लेखन ने समकालीन आलोचना परिदृश्य को अनुप्राणित करना शुरू किया। प्रो. नारंग के लेखन का उद्देश्य केवल साहित्य के पाठ की संभावनाओं का संकेत भर नहीं है, बल्कि आप ग़ज़ल से मसनवी, कहानी से उपन्यास तक प्रत्येक विधा और अरबी-फ़ारसी काव्यशास्त्र एवं संस्कृत काव्यशास्त्र से लेकर संरचनावाद एवं उत्तर-संरचनावाद तक को स्पर्श करते हैं। आपने अपनी विद्वत्ता और सैद्धांतिक प्रतिभा के कुशल प्रयोग द्वारा इन दृष्टियों और अंतर्दृष्टियों के माध्यम से मीर, ग़ालिब, अनीस, नज़ीर, इक़बाल, फ़ैज़, फ़िराक़ आदि तमाम कवियों को शामिल करते हुए संपूर्ण उर्दू काव्य की पुनर्परीक्षा और पुनर्मूल्यांकन किया है। (द्रष्टव्य: *अदबी तनक़ीद और उस्लूबियात*, 1989; *उर्दू अफ़साना : रिवायत और मसायल*, 1986; *उर्दू लैंग्वेज एंड लिटरेचर : क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स*, 1991; और *उर्दू पर खुलता दरीचा*, 2005)।

साख़्तियात पस साख़्तियात और मशरिकी शेरियात (1993), (संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र) आपकी दार्शनिक और

Professor Narang's literary odyssey began with a scholarly interest in stylistics, semiotics and socio-linguistics and his first book *Karkhandari Dialect of Delhi Urdu* was published in 1961. It presented a perceptive sociolinguistic analysis of a neglected speech used by the indigenous workers and artisans of Delhi.

Professor Gopi Chand Narang has been on the right side of many of the substantial literary discourses of the twentieth century and his more than 64 books in Urdu, English and Hindi unfailingly demonstrate a sharp critical insight and a deep understanding of the contemporary ideological positions and literary debates. In his writings one can see that a variety of discourses expressing different ideological positions are in play without being evaluated by a totalizing authorial discourse.

Right from the beginning he has been intrigued by the hybrid nature and plurality of Urdu language. As a response to the post-partition parochial politicalisation and communalization of the language, he systematically built a scientific discourse establishing the Indian cumulative unconscious roots of Urdu language and literature, and uncovered its deep-structure links with the Indian psyche and mind. This resulted in a set of three seminal inter-connected studies, namely, *Hindustani Qisson se Makhooz Urdu Masnaviyan* (1961), *Urdu Ghazal aur Hindustani Zehn-o-Tehzeeb* (2000) and *Hindustan ki Tehreek-e-Azadi aur Urdu Shairi* (2002), which are core books and considered landmarks in cultural studies. His related volumes on *Amir Khusrau ka Hindavi Kalaam* (1987), *Saniha-e-Karbala bataur Sheri Isti'ara* (1986) and *Urdu Zabaan aur Lisaniyaat* (2006) bear testimony of his tremendous sweep in socio-cultural and historical studies. His Amir Khusrau volume is based on the rare manuscript he discovered at the Staatsbibliothek, Berlin and contains 150 hithertofore unknown Hindavi *Pahelis* of the poet.

His penchant for close study of the text by employing stylistics and semiotics made him one of the gifted disseminators of new literary theories. Professor Narang's writings are not only aimed at suggesting possibilities in reading literature but also touch upon every genre from Ghazal to Masnavi, short story to novel and Arabic Persian poetics and Sanskrit poetics to structuralism and post-structuralism. He deftly applied his profound learning and speculative intelligence by roping in these approaches and insights to reexamine and reevaluate the whole range of Urdu poetry including Mir, Ghalib, Anis, Nazeer, Iqbal, Faiz, Firaq and a host of others. (cf. *Adabi Tanqeed aur Usloobiyaat*, 1989; *Urdu Afsana: Riwayat aur Masail*, 1986; *Urdu Language and Literature: Critical Perspectives*, 1991; *and Urdu par Khulta Dareecha*, 2005).

Sakhtiyaat, Pas-sakhtiyat aur Mashriqui Sheriyaat (1993) (Structuralism, Post-structuralism and Eastern Poetics) is a philosophical and rhetorical *tour de force* of his scholarship.

अलंकारशास्त्रीय विद्वत्ता का प्रतिमान है। यह कृति न केवल एक प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करती है, वरन् भाषा की अवधारणा एवं उसके द्वारा यथार्थ के सृजन संबंधी विमर्श के लिए प्रभूत सामग्री उपलब्ध कराती है। प्रो. नारंग ने यह प्रतिपादित किया है कि संरचनावाद किस तरह यथार्थ की आध्यात्मिक अवधारणा के आधारों की जड़ों पर आघात करता है। साहित्य के प्रति स्पष्ट विचार बहुत कुछ उस सोच पर आश्रित हैं जो स्वयं विचारधारात्मक संरचना है और इतिहास आधारित है।

प्रो. नारंग का चिन्तक व्यक्तित्व वहाँ अपनी पराकाष्ठा पर है, जहाँ आपने सॉस्युअर द्वारा प्रतिपादित शब्दों के ध्वनि-सिद्धांत तथा 'मनोवैज्ञानिक फ़ेनोमिना' और प्राचीन भारतीय चिन्तकों और वैयाकरणों द्वारा प्रकृत ध्वनि एवं वैकृत ध्वनि के बीच स्पष्ट विभेद की अवधारणाओं पर समानांतर रूप से विचार किया है। नारंग सॉस्युअर के विचारों को इस रूप में संबद्ध करते हैं कि बौद्ध विचारकों के अपोह-सिद्धांत के अनुसार अन्य वस्तु के संदर्भ के बिना भाषा में कुछ भी अर्थपूर्ण नहीं है, क्योंकि किसी शब्द का अर्थ उसकी सकारात्मकता में नहीं, वरन उसके सह-संबद्धों के विरोध में है।

पुस्तक में संस्कृत काव्यशास्त्र, अरबी-फ़ारसी काव्यशास्त्र और संरचनावाद के बीच त्रिकोणीय संवाद प्रस्तुत करने का प्रयत्न है। नारंग ने प्राय: उपेक्षित प्राच्य काव्यशास्त्र को अपने अनुसंधित्सु मन की ज्योति से जीवंत किया है और प्राचीनतम काल से लेकर समकालीन साहित्य सिद्धांतों के प्रारंभिक लक्षणों तक का समाहार किया है। अंत:साक्ष्य सुस्पष्ट और व्यावहारिक होने के नाते विश्वसनीय हैं। संरचनावाद और उत्तर संरचनावाद से प्राच्य काव्यशास्त्र को जोड़कर नारंग आलोचना के नए प्रतिमान पर समृद्ध बहस की शुरुआत करते हैं। यह बहस एक सार्वभौम और राष्ट्रीय अस्मिता की निरंतर खोज की पड़ताल करती है।

आपकी नवीनतम पुस्तक *फ़िक्शन शेरियात : तश्कील-ओ-तनक़ीद* (2009) (कथा का शास्त्र : रचना और समीक्षा) में एक सचेत बहस प्रस्तुत की गई है कि कैसे कथा साहित्य सहज मानवीय आवेगों को पुनर्व्यवस्थित करता है। प्रेमचंद, मंटो, राजिन्दर सिंह बेदी, कृश्न चंदर, बलवंत सिंह, इंतिज़ार हुसैन, गुलज़ार और साजिद रशीद जैसे महत्त्वपूर्ण कथाकारों के पाठकेंद्रित गहन और सचेत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विचारधारा, दर्शन, इतिहास, सौंदर्यशास्त्र और भाषाशास्त्र मिलकर उस सांस्कृतिक आकाश को रचते हैं, जहाँ किसी साहित्यिक रचना का जन्म होता है।

व्यापक रूप से स्वीकृत लेखक की मौलिकता की अवधारणा के विपरीत नारंग कहते हैं कि लेखक का मन दृढ़ता के साथ इतिहास और संस्कृति से संबद्ध होता है और जो कुछ भी वह लिखता है, उसमें काफ़ी कुछ योगदान पूर्व पाठों का होता है। आप अकाट्य ढंग से निरूपित करते हैं कि संस्कृति कठोर धर्मपरक और तानाशाही अवधारणा नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न दृष्टिकोणों, प्रवृत्तियों और वैचारिक महत्त्वाकांक्षाओं का समाहार है। दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक व्यवस्था पाठ को जन्म देती है और पाठ संस्कृति के विविध अंगों को प्रस्तुत करता है, जो मानवीय कल्पना को उत्साहित करता है।

प्रो. नारंग की पुस्तक *रीडिंग्स इन लिटरेरी उर्दू प्रोज़* (1968) का प्रकाशन विस्कॉनसिन यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा किया गया था, जो 'नारंग रीडर'

The book not only provides a veritable overview but proffers a wealth of discussion on the concept of language and how it constructs reality. At the outset, Professor Narang rightly brings out how structuralism strikes at the roots of metaphysical concept of reality. The apparent views about literature owe much to common sense which itself is an ideological construct and draws its sustenance from historicity.

Professor Narang is at his most persuasive when he draws parallels between Saussure's sound patterns of words and concepts "Psychological Phenomena" and ancient Indian thinkers' and grammarians' candid distinction between *Prakrita dhvani* (Psychological) and *Vaikrita dhvani* (physical). Narang connects Saussure's view that in language nothing has value except in opposition to something else with the Apoha theory of the Buddhist thinkers who pointed out that meaning of a word is not in its positivity but in the contra-distinction of its correlates.

The book attempts to set up a tripartite dialogue between Sanskrit Poetics, Arabic-Persian Poetics and Structuralism. Narang has quickened the relatively ignored Eastern Poetics with the glow of his probing mind and gleaned up early signs of contemporary literary theories from the dead past. The internal evidence is convincing in its precision and application. Having yoked Eastern Poetics with Structuralism and Post-Structuralism, Narang initiates a rich discussion on the new model of criticism. The debate also explores the simultaneous quest for a universal and national identity.

His recent book *Fiction Sheriyaat: Tashkeel-o-Tanqeed* (2009) (Poetics of Fiction: Formation and Criticism), proffers a perceptive discussion on how fiction readjusts innate human impulses. A close and perceptive textual study of prominent fiction writers such as Premchand, Manto, Rajinder Singh Bedi, Krishna Chander, Balwant Singh, Intizar Husain, Gulzar and Sajid Rasheed makes it clear that ideology, philosophy, history, aesthetics, and linguistics constitute the cultural space from which a piece of literature draws its breath.

Contrary to the widely accepted concept of originality of the writer, Narang points out that the writer's mind is firmly rooted in history and culture, and whatever he produces draws heavily from previous texts. He cogently delineates that culture is not an oppressive theological and monocratic concept, but subsumes different and divergent points of view, attitudes and ideological aspirations. In other words, a cultural system gives birth to a text, and the text produces various tissues of culture that fire human imagination.

Professor Narang's book *Readings in Literary Urdu Prose* (1968) published by the University of Wisconsin Press, popularly known as 'Narang Reader', is widely

के नाम से लोकप्रिय है और ब्रिटेन, अमेरिका, जर्मनी, नॉर्वे, जापान एवं तुर्की के विश्वविद्यालयों में शिक्षण सामग्री के रूप में व्यापक तौर पर उपयोग में लाई जाती है।

अध्यापन के अलावा प्रो. नारंग ने अनेक संस्थानों में दुर्लभ उत्साह और समर्पण के साथ शीर्ष भूमिकाएँ भी निभाईं। आपने दिल्ली उर्दू एकेडमी के उपाध्यक्ष (1996-1999), नेशनल काउंसिल फ़ॉर प्रोमोशन ऑफ़ उर्दू लैंग्वेज—मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उपाध्यक्ष (1998-2004), साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष (1998-2002) एवं अध्यक्ष (2003-2007) के पदों को सुशोभित किया। जहाँ भी आप रहे, आपने संस्था को मज़बूत किया, उसका विकास किया और उल्लेखनीय परिणाम दिखलाए।

सिद्ध साहित्यकार प्रो. नारंग ने साहित्य की दुनिया में अपने योगदान के लिए विश्वव्यापी पहचान बनाई है। आपको बड़ी संख्या में पुरस्कार, सम्मान और पदवियाँ प्रदान की गई हैं। प्रो. नारंग इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के इंदिरा गांधी मेमोरियल फ़ेलो, रॉकफ़ेलर फ़ाउंडेशन (2002-2004) और बेलाजिओ स्टडी सेंटर, इटली के रॉकफ़ेलर फ़ाउंडेशन फ़ेलो फ़ॉर रेज़िडेंसी (1997) रहे हैं। आपको मेज़िनी स्वर्ण पदक (इटली, 2005), अमीर खुसरो पुरस्कार (शिकागो, 1987), कैनेडियन एकेडमी ऑफ़ उर्दू लैंग्वेज़ एंड लिटरेचर अवार्ड (टोरंटो, 1987), एसोसिएशन ऑफ़ एशियन स्टडीज़, मिड अटलांटिक रीजन, यूएसए का पुरस्कार (1982), यूरोपियन उर्दू राइटर्स सोसायटी अवार्ड (लंदन, 2005), उर्दू मरकज़ इंटरनेशनल अवार्ड (लॉस एंजेलिस, 1995) और आलमी फ़रोग-ए-उर्दू अदब अवार्ड (दोहा-क़तर, 1998) प्राप्त हैं। आप रॉयल एशियाटिक सोसायटी, लंदन के फ़ेलो रहे हैं और आपके अमूल्य योगदान को डिक्शनरी ऑफ़ इंटरनेशनल बायोग्राफ़ी, कैम्ब्रिज, ब्रिटेन में उल्लिखित किया गया है। आप एकमात्र उर्दू लेखक हैं, जिसे भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के राष्ट्रपतियों ने सम्मानित किया है। 1971 में आपको अल्लामा इक़बाल पर किए गए आपके ज्ञानवर्धक कार्य के लिए पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय स्वर्ण पदक मिला था। भारत में आपकी उपलब्धियों के लिए आपको पद्मभूषण (2004) और पद्मश्री (1990) अलंकरणों से अलंकृत किया गया। देश के तीन प्रमुख केन्द्रीय विश्वविद्यालयों —अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय और केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने आपको क्रमशः 2009, 2008 और 2007 में डी.लिट्. की मानद उपाधियाँ प्रदान कीं। आपने प्रतिष्ठित साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1995 में और ग़ालिब अवार्ड 1985 में प्राप्त किया।

बहुलतावाद, उदारतावाद, लोकतंत्र और सहिष्णुता के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध प्रो. गोपीचंद नारंग ने सदैव संकीर्णतावाद, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई है। आपने विचारधारा की भूमिका पर ज़ोर दिया है, लेकिन आप मानते हैं कि साहित्य को विचारधारा की संकीर्ण सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। आपका मानना है कि उर्दू सद्भाव और सौहार्द की वाहक भाषा है और सदियों से हिन्दू, सिख और मुस्लिमों के बीच इसने सेतु का काम किया है।

भारतीय साहित्य, ख़ासकर उर्दू में आपके सराहनीय योगदान और विद्वत्तापूर्ण कार्य के लिए प्रो. नारंग को अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

used at several Universities in UK, USA, Germany, Norway, Japan and Turkey as teaching material.

Besides teaching, Professor Narang served many an institution in apex positions with rare zeal and dedication. He was Vice Chairman, Delhi Urdu Academy (1996-1999), Vice Chairman, National Council for Promotion of Urdu Language - HRD (1998-2004), Vice President, Sahitya Akademi (1998-2002) and President, Sahitya Akademi (2003-2007). Wherever he worked he strengthened the institutions, increased the pace and showed results.

An accomplished litterateur Professor Narang has won recognition world over for his outstanding contribution to literature. The awards, honours and distinctions conferred upon him are too numerous to mention. Professor Narang was Indira Gandhi Memorial Fellow of the IGNCA (2002-2004), and Rockefeller Foundation Fellow for Residency at Bellagio Study Centre, Italy (1997). He received Mazzini Gold Medal (Italy, 2005), Amir Khusro Award (Chicago, 1987), Canadian Academy of Urdu Language and Literature Award (Toronto, 1987), Association of Asian Studies, Mid Atlantic Region, USA Award (1982), European Urdu Writers Society Award (London, 2005), Urdu Markaz International Award (Los Angeles, 1995), Alami Farogh-e-Urdu Adab Award (Doha-Qatar, 1998). He was a fellow of Royal Asiatic Society, London, UK and his invaluable contribution is acknowledged in the Dictionary of International Biography, Cambridge, UK. He is the only Urdu writer honoured by both the President of India and the President of Pakistan. In 1971, he got the President's National Gold Medal from Pakistan for his illuminating work on Allama Iqbal. Back home his achievements fetched him Padma Bhushan (2004) and Padma Shri (1990). Three premier central universities of the country – Aligarh Muslim University, Maulana Azad National Urdu University and Central University, Hyderabad, have conferred D. Litt. *Honoris causa* on him in 2009, 2008 and 2007 respectively. He received the prestigious Sahitya Akademi Award in 1995 and the Ghalib Award in 1985.

Fully committed to pluralism, liberalism, democracy and tolerance Professor Gopi Chand Narang has always raised his voice against parochialism, religious fanaticism and social injustice. He stresses the role of ideology but believes that literature goes beyond the narrow confines of ideology. For him Urdu is the conduit language of interfaith harmony and has served as a bridge between Hindus, Sikhs and Muslims for centuries.

In recognition of Professor Narang's invaluable and seminal contribution to the advancement of scholarship in general and his meritorious service to the cause of Indian literature and Urdu in particular, the Sahitya Akademi confers on Professor Narang its highest honour, the Fellowship.

गोपीचंद नारंगः
उर्दूभाषायाः समालोचकेषु,
विदत्सु रचयितृषु च
विश्रुतत्वात्
साहित्य-अकादेमी-संस्थायाः
पारिषदो वृत इति प्रमाणीकरोति

साहित्य-अकादेमी-अध्यक्षः २००९

GOPI CHAND NARANG
ELECTED FELLOW OF
SAHITYA AKADEMI
FOR HIS EMINENCE
AS SCHOLAR
WRITER AND CRITIC IN URDU

PRESIDENT SAHITYA AKADEMI 2009